अनुपम मिश्र

अनुपम मिश्र का जन्म सन् 1948 ई० में हुआ । वे हिंदी के मूर्धन्य कवि भवानी प्रसाद मिश्र के सुपुत्र हैं । उनके जीवन के प्रारंभिक वर्ष छत्तीसगढ़ के एक छोटे से गाँव में बीते । उनकी प्रारंभिक शिक्षा हैदराबाद एवं मुंबई में हुई । बाद में वे दिल्ली आ गए और यहीं से संस्कृत में एम० ए० किया । उन्होंने सन् 1969 में गाँधी शांति प्रतिष्ठान में कार्यभार सँभाला और तभी से इस संस्था के पर्यावरण प्रकोष्ठ में सेवारत हैं ।

लंबे अरसे तक नगरीय जीवन बिताने पर भी गाँव का मोह नहीं छूटा और इसलिए ग्रामीण संस्कृति की झलक उनके साहित्य में दिखाई देती है । मिश्र जी गाँधीवादी विचारक और एक सजग सामाजिक कार्यकर्ता हैं । पर्यावरण संबंधी समस्याओं पर उनकी पैनी दृष्टि रही है । पानी की समस्या पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया और उन्हीं समस्याओं से संबंधित कार्यक्षेत्र में वे जुटे रहते हैं ।

अनुपम मिश्र की रचनाओं में एक ओर भारत के गाँवों की मिट्टी की सोंधी गंध है तो दूसरी ओर ज्वलंत समस्याओं के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण । इसीलिए अकाल, वर्षा, पानी जैसी समस्याओं ने उनके लेखन में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है । उनकी भाषा सरल-सहज बोलचाल की भाषा है । आंचलिक शब्द उनकी रचनाओं में खूब बोलते हैं ।

अनुपम मिश्र की प्रमुख रचनाएँ हैं - 'आज भी खरे हैं तालाब', 'राजस्थान की रजत बूँदें' । 'हमारा पर्यावरण' पुस्तक के निर्माण में भी उनकी सक्रिय भूमिका रही है ।

पानी मनुष्य के लिए ईश्वर की सबसे बड़ी नेमत है । लेकिन 'धेले भर' के विकास के इस नये दौर ने पानी का अपव्यय बड़ी तेजी से किया है । इस संकट के प्रति यदि हम सचेत नहीं होंगे तो आने वाला कल हाहाकारी होगा - इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए । अगर हम पानी के साथ अच्छा रिश्ता बना लें तो कभी भी पानी की कमी नहीं पड़ेगी ; चाहे उपलब्ध पानी की मात्रा कम ही क्यों न हो । राजस्थान की जल-संस्कृति इसका सबसे अच्छा उदाहरण है । प्रस्तुत पाठ 'राजस्थान की रजत बूँदें' से साभार संकलित है, इस पाठ में दिखाया गया है कि किस तरह राजस्थान के समाज ने प्रकृति से मिलने वाले कम पानी का कभी रोना नहीं रोया, बल्कि इसे एक चुनौती के साथ स्वीकार कर जल-संग्रह की अनोखी परंपरा का विकास किया ।

पधारो म्हारे देस

कभी यहाँ समुद्र था । लहरों पर लहरें उठती रही थीं । काल की लहरों ने उस अथाह समुद्र को न जाने क्यों और कैसे सुखाया होगा । अब यहाँ रेत का समुद्र है । लहरों पर लहरें अभी भी उठती हैं ।

प्रकृति के एक विराट रूप को दूसरे विराट रूप में–समुद्र से मरुभूमि में बदलने में लाखों बरस लगे होंगे । नए रूप को आकार लिए भी आज हजारों बरस हो चुके हैं । लेकिन राजस्थान का समाज यहाँ के पहले रूप को भूला नहीं है । वह अपने मन की गहराई में आज भी उसे **हाकड़ो** नाम से याद रखे है । कोई हजार बरस पुरानी डिंगल भाषा में और आज की राजस्थानी में भी हाकड़ो शब्द उन पीढ़ियों की लहरों में तैरता रहा है, जिनके पुरखों ने भी कभी समुद्र नहीं देखा था ।

आज के मारवाड़ के पश्चिम में लाखों बरस पहले रहे हाकड़ो के अलावा राजस्थान के मन में समुद्र के और भी कई नाम हैं । संस्कृत से विरासत में मिले **सिंधु, सरितापति, सागर, वाराधिप** तो हैं ही; **आच, उअह, देधाण, वडनीर, वारहर, सफरा-भडार** जैसे संबोधन भी हैं । एक नाम **हेल** भी है और इसका अर्थ समुद्र के साथ-साथ विशालता और उदारता भी है ।

यह राजस्थान के मन की उदारता ही है कि विशाल मरुभूमि में रहते हुए भी उसके कंठ में समुद्र के इतने नाम मिलते हैं । इसकी दृष्टि भी बड़ी विचित्र रही होगी । सृष्टि की जिस घटना को घटे हुए ही लाखों बरस हो चुके, जिसे घटने में भी हजारों बरस लगे, उस सबका जमा-घाटा करने कोई बैठे तो आँकड़ों के अनंत विस्तार के अँधेरे में खो जाने के सिवा और क्या हाथ लगेगा । खगोलशास्त्री लाखों, करोड़ों मील की दूरियों को 'प्रकाश वर्ष' से मापते हैं । लेकिन राजस्थान के मन ने तो युगों के भारी-भरकम गुना-भाग को पलक झपक कर निपटा दिया । इस बड़ी घटना को वह 'पलक दरियाव' की तरह याद रखे हैं-पलक झपकते ही दरिया का सूख जाना भी इसमें शामिल है और भविष्य में इस सूखे स्थल का क्षणभर में फिर से दरिया बन जाना भी ।

समय की अंतहीन धारा को क्षण-क्षण में देखने और विराट विस्तार को अणु में परखने वाली इस पलक ने, दृष्टि ने हाकड़ो को खो दिया । पर उसके जल को, कण-कण को, बूँदों में देख लिया । इस समाज ने अपने को कुछ इस रीति से ढाल लिया कि अखंड समुद्र खंड-खंड होकर ठाँव-ठाँव यानी जगह-जगह फैल गया । पाठ्यपुस्तकों से लेकर देश के योजना आयोग तक राजस्थान की, विशेषकर मरुभूमि की छवि एक सूखे, उजड़े और पिछड़े क्षेत्र की है । थार रेगिस्तान

का वर्णन तो कुछ ऐसा मिलेगा कि कलेजा सूख जाए । देश के सभी राज्यों में क्षेत्रफल और आबादी की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाला राजस्थान भूगोल की सब किताबों में वर्षा के मामले में सबसे अंतिम है । वर्षा को पुराने इंच में नापें या नए सेंटीमीटर में, वह यहाँ सबसे कम ही गिरती है । यहाँ पूरे बरस भर में वर्षा 60 सेंटीमीटर का औसत लिए है । देश की औसत वर्षा 110 सेंटीमीटर आँकी गई है । उस हिसाब से भी राजस्थान का औसत आधा ही बैठता है । लेकिन औसत बताने वाले आँकड़े भी यहाँ का कोई ठीक चित्र नहीं दे सकते । राज्य में एक छोर से दूसरे छोर तक कभी भी एक सी वर्षा नहीं होती । कहीं यह 100 सेंटीमीटर से अधिक है तो कहीं 25 सेंटीमीटर से भी कम ।

भूगोल की किताबें प्रकृति को, वर्षा को यहाँ 'अत्यंत कंजूस महाजन' की तरह देखती हैं और राज्य के पश्चिमी क्षेत्र को इस महाजन का सबसे दयनीय शिकार बताती हैं । इस क्षेत्र में जैसलमेर, बीकानेर, चूरू, जोधपुर और श्रीगंगानगर आते हैं । लेकिन यहाँ कंजूसी में भी कंजूसी मिलेगी । वर्षा का 'वितरण' बहुत असमान है । पूर्वी हिस्से से पश्चिमी हिस्से की तरफ आते-आते वर्षा कम-से-कम होती जाती है । पश्चिम तक जाते-जाते वर्षा सूरज की तरह 'डूबने' लगती है । यहाँ पहुँचकर वर्षा सिर्फ 16 सेंटीमीटर रह जाती है । इस मात्रा की तुलना कीजिए दिल्ली से, जहाँ 150 सेंटीमीटर से ज्यादा पानी गिरता है, तुलना कीजिए उस गोवा से, कोंकण से, चेरापूँजी से, जहाँ यह आँकड़ा 500 से 1000 सेंटीमीटर तक जाता है ।

मरुभूमि में सूरज गोवा, चेरापूँजी की वर्षा की तरह बरसता है । पानी कम और गरमी ज्यादा - ये दो बातें जहाँ मिल जाएँ वहाँ जीवन दूभर हो जाता है, ऐसा माना जाता है । दुनिया के बाकी मरुस्थलों में भी पानी लगभग इतना ही गिरता है, गरमी लगभग इतनी ही पड़ती है । इसलिए वहाँ बसावट बहुत कम ही रही है । लेकिन राजस्थान के मरुप्रदेश में दुनिया के अन्य ऐसे प्रदेशों की तुलना में न सिर्फ बसावट ज्यादा है, उस बसावट में जीवन की सुगंध भी है । यह इलाका दूसरे देशों के मरुस्थलों की तुलना में सबसे जीवंत माना गया है ।

इसका रहस्य यहाँ के समाज में है । राजस्थान के समाज ने प्रकृति से मिलने वाले इतने कम पानी का रोना नहीं रोया । उसने इसे एक चुनौती की तरह लिया और अपने ऊपर से नीचे तक कुछ इस ढंग से खड़ा किया कि पानी का स्वभाव समाज के स्वभाव में बहुत सरल ढंग से बहने लगा ।

इस 'सवाई' स्वभाव से परिचित हुए बिना यह कभी समझ में नहीं आएगा कि यहाँ पिछले एक हजार साल के दौर में जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर और फिर जयपुर जैसे बड़े शहर भी बहुत सलीके के साथ कैसे बस सके थे । इन शहरों की आबादी भी कोई कम नहीं थी । इतने कम पानी के इलाके में होने के बाद भी इन शहरों का जीवन देश के अन्य शहरों के मुकाबले कोई कम सुविधाजनक नहीं था । इनमें से हरेक शहर अलग-अलग दौर में लंबे समय तक सत्ता, व्यापार और कला का प्रमुख केंद्र भी बना रहा था । जब मुंबई, कोलकाता, चेन्नई जैसे आज के बड़े शहरों

की 'छठी' भी नहीं हुई थी तब जैसलमेर आज के ईरान, अफगानिस्तान से लेकर रूस तक के कई भागों से होनेवाले व्यापार का एक बड़ा केंद्र बन चुका था ।

जीवन की, कला की, व्यापार की, संस्कृति की ऊँचाइयों को राजस्थान के समाज ने अपने जीवन-दर्शन की विशिष्ट गहराई के कारण ही छुआ था । इस जीवन-दर्शन में पानी का काम एक बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था । सचमुच धेले भर के विकास के इस नए दौर ने पानी की इस भव्य परंपरा का कुछ क्षय जरूर किया है, पर वह उसे आज भी पूरी तरह तोड़ नहीं सका है । यह सौभाग्य ही माना जाना चाहिए ।

पानी के काम में यहाँ भाग्य भी है और कर्त्तव्य भी । वह भाग्य ही तो था कि महाभारत युद्ध समाप्त हो जाने के बाद श्रीकृष्ण कुरुक्षेत्र से अर्जुन को साथ लेकर वापस द्वारका इसी रास्ते से लौटे थे । उनका रथ मरुदेश पार कर रहा था । आज के जैसलमेर के पास त्रिकूट पर्वत पर उत्तुंग ऋषि तपस्या करते हुए मिले थे । श्रीकृष्ण ने उन्हें प्रणाम किया था और उनके तप से प्रसन्न होकर उन्हें वर माँगने कहा था । उत्तुंग का अर्थ है ऊँचा । वे सचमुच बहुत ऊँचे थे । उन्होंने अपने लिए कुछ नहीं माँगा । प्रभु से प्रार्थना की कि ''यदि मेरे कुछ पुण्य हैं तो भगवन वर दें कि इस क्षेत्र में कभी जल का अकाल न रहे ।''

''तथास्तु'', भगवान ने वरदान दिया था ।

लेकिन मरुभूमि का भागवान समाज इस वरदान को पाकर हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठा । उसने अपने को पानी के मामले में तरह-तरह से कसा । गाँव-गाँव, ठाँव-ठाँव वर्षा को वर्ष भर सहेज कर रखने की रीति बनाई ।

रीति के लिए यहाँ एक पुराना शब्द **वोज** है । यानी रचना, युक्ति और उपाय तो है ही, सामर्थ्य, विवेक और विनम्रता के लिए भी इस शब्द का उपयोग होता रहा है । वर्षा की बूँदों को सहेज लेने का वोज विवेक के साथ रहा है और विनम्रता लिए हुए भी । यहाँ के समाज ने वर्षा को इंच या सेंटीमीटर में नहीं, अँगुलों या बित्तों में नहीं, बूँदों में मापा होगा । उसने इन बूँदों को करोड़ों बूँदों की तरह देखा और बहुत ही सजग ढंग से, वोज से इस तरल रजत की बूँदों को सँजोकर, पानी की अपनी जरूरत को पूरा करने की एक ऐसी भव्य परंपरा बना ली, जिसकी धवलधारा इतिहास से निकल कर वर्तमान तक बहती है और वर्तमान को भी इतिहास बनाने का वोज यानी सामर्थ्य रखती है ।

राजस्थान के पुराने इतिहास में मरुभूमि का या अन्य क्षेत्रों का भी वर्णन सूखे, उजड़े और एक अभिशप्त क्षेत्र की तरह नहीं मिलता । रेगिस्तान के लिए आज प्रचलित **थार** शब्द भी ज्यादा नहीं दिखता । अकाल पड़े हैं, कहीं-कहीं पानी का कष्ट भी रहा है पर गृहस्थों से लेकर जोगियों ने, कवियों से लेकर मांगणियारों ने, लंगाओं ने, हिंदू-मुसलमानों ने इसे 'धरती धोरां री' कहा है । रेगिस्तान के पुराने नामों में **स्थल** है, जो शायद हाकड़ो, समुद्र के सूख जाने से निकले स्थल का सूचक रहा हो । फिर स्थल का **थल** और **महाथल** बना और बोलचाल में **थली** और **धरधूधल**

भी हुआ । थली तो एक बड़ी मोटी पहचान की तरह रहा है । बारीक पहचान में उसके अलग-अलग क्षेत्र अलग-अलग विशिष्ट नाम लिए हुए थे । **माड़, मारवाड़, मेवाड़, मेरवाड़, ढूँढार, गोडवाड़, हाडौती** जैसे बड़े विभाजन, तो **दसरेक** और **धन्वदेश** जैसे छोटे विभाजन भी थे और इस विराट मरुस्थल के छोटे-बड़े राजा चाहे जितने रहे हों-नायक तो एक ही रहा है - श्रीकृष्ण। यहाँ उन्हें बहुत स्नेह के साथ **मरुनायकजी** की तरह पुकारा जाता है ।

मरुनायकजी का वरदान और फिर समाज के नायकों के वोज, सामर्थ्य का एक अनोखा संजोग हुआ । इस संजोग से **वोजतो-ओजतो** यानी हरेक द्वारा अपनाई जा सकने वाली सरल, सुंदर रीति को जनम मिला । कभी नीचे धरती पर क्षितिज तक पसरा हाकड़ो ऊपर आकाश में बादलों के रूप में उड़ने लगा था । ये बादल कम ही होंगे । पर समाज ने इनके समाए जल को इंच या सेंटीमीटर में न देख अनगिनत बूँदों की तरह देख लिया और इन्हें मरुभूमि में, राजस्थान भर में ठीक बूँदों की तरह ही छिटके **टाँकों, कुंड-कुंडियों, बेरियों, जोहड़ों, नाडियों, तालाबों, बावड़ियों** और **कुएँ, कुँइयों** को अखंड **हाकड़ो** को खंड-खंड नीचे उतार लिया ।

जसढोल, यानी प्रशंसा करना । राजस्थान ने वर्षा के जल का संग्रह करने की अपनी अनोखी परंपरा का, उसके जस का कभी ढोल नहीं बजाया । आज देश के लगभग सभी छोटे-बड़े शहर, अनेक गाँव, प्रदेश की राजधानियाँ और तो और देश की राजधानी तक खूब अच्छी वर्षा के बाद भी पानी जुटाने के मामले में बिलकुल कंगाल हो रही है । इससे पहले कि देश पानी के मामले में बिलकुल 'ऊँचा' सुनने लगे, सूखे माने गए इस हिस्से राजस्थान में, मरुभूमि में फली-फूली जल-संग्रह की भव्य परंपरा का जसढोल बजना ही चाहिए ।

पधारो म्हारे देस ।

♦ ♦ ♦

अभ्यास

पाठ के साथ

1. 'हाकड़ो' राजस्थानी समाज के हृदय में आज भी क्यों रचा-बसा है ?
2. 'हेल' नाम समुद्र के साथ-साथ अन्य कौन-कौन से अर्थों को दर्शाता है ?
3. किस रेगिस्तान का वर्णन कलेजा सुखा देता है ?
4. भूगोल की किताबें किनको 'अत्यंत कंजूस महाजन' की तरह देखती हैं और क्यों ?
5. राजस्थानी समाज ने प्रकृति से मिलने वाले इतने कम पानी का रोना क्यों नहीं रोया ?
6. ''यह राजस्थान के मन की उदारता ही है कि विशाल मरुभूमि में रहते हुए भी उसके कंठ में समुद्र के इतने नाम मिलते हैं ?'' इस कथन का क्या अभिप्राय है ?
7. जल संग्रह कैसे करना चाहिए ?

8. त्रिकूट पर्वत कहाँ है ?
9. 'धरती धोरां री' किसे कहा गया है और क्यों ?
10. मरुनायकजी कहकर किसे पुकारा गया है ? उनकी भूमिका स्पष्ट करें ।
11. राजस्थान में वर्षा का क्या स्वरूप है ?
12. 'रीति' के लिए राजस्थान में 'वोज' शब्द है । यह क्या-क्या अर्थ रखता है ?
13. लेखक ने 'जसढोल' शब्द का किस अर्थ में प्रयोग किया है और क्यों ?
14. इस फीचर को पढ़कर आपको क्या शिक्षा मिली ? आप अपने जीवन में इसका उपयोग कैसे करेंगे ?
15. लेखक क्यों 'पधारो म्हारे देस' कहते हैं ?

पाठ के आस-पास

1. राजस्थान में जल संरक्षण के लिए कुंड-कुंडियों, तालाब-कुँओं इत्यादि का उपयोग किया जाता है । आप अपने घरों में किस तरह जल का संरक्षण करना चाहेंगे ?
2. जल संरक्षण के महत्त्व पर अपने विद्यालय में एक गोष्ठी करें ।
3. जल संरक्षण की नई तकनीक के बारे में अपने शिक्षक से चर्चा करें या जानकारी प्राप्त करें ।
4. पाठ में भगवान श्रीकृष्ण से जुड़े जिन स्थानों का उल्लेख हुआ है उन्हें मानचित्र पर दर्शाएँ । साथ ही त्रिकूट पर्वत कहाँ है ? इसे भी दिखलाएँ ।
5. राजस्थान की मरुभूमि में एकमात्र बहने वाली नदी लूनी है । इसका प्रवाह क्षेत्र अपने शिक्षक से पूछें ।
6. डिंगल क्या है ? इसकी जानकारी अपने शिक्षक से प्राप्त करें ।

भाषा की बात

1. 'समुद्र' शब्द के पर्यायवाची बताएँ ।
2. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण बताएँ और वाक्य में प्रयोग करें –
   जल, रेत, समुद्र, पुराण, प्रकाश, स्थल, परंपरा, समाज
3. दिए गए शब्दों के समानार्थी शब्द लिखें –
   विराट, प्राचीन, मरुभूमि, दृष्टि, युग, कला, जीवन
4. इस पाठ से राजस्थानी शब्दों को चुनें और उनका हिंदी पर्याय दें ।
5. 'वि' उपसर्ग से पाँच शब्द बनाएँ ।
6. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद करें –
   संस्कृत, नायक, तथास्तु
7. वाक्य-प्रयोग द्वारा लिंग-निर्णय करें –
   लहर, देश, दृष्टि, पलक, दरिया, नदी, मरुस्थल, समाज, धरती, आकाश, पानी

शब्द निधि :

अभिशप्त	:	अभिशाप से पीड़ित	विभाजन	:	बँटवारा
सामर्थ्य	:	क्षमता	दृष्टि	:	निगाह
धवल	:	उजला	विस्तार	:	फैलाव